RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 39 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 2 मार्च 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

होली अंक 2026

बरस दिवाली बरसे फाग हो हो हो हो

जो नर जीवें खेलें फाग

हो हो हो होलक रे

राजनीति के झिलमिल सितारों के अंगना में होली की व्यूहरचना

होली के रंगों में आप सभी को तरावट की शुभकामनाएं। होली का हर रंग मेहनत करने वालों, ईमानदारों, अपनी कला-संस्कृति के लिये दिल से लगने वालों, किसी का हक न मारने वालों, समाज में विद्वेष न फैलाने वालों, कुकृत्यों से दूर रहने वालों के जीवन में खुशहाली लाए और रंग से बदरंग हो चुकी आत्माओं को सद्बुद्धि दे, ईश्वर से यही कामना है।

वैसे इस बार राजनीति के झिलमिल सितारों के अंगना में होली की व्यूहरचना हो चुकी है। 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर गुपचुप मंत्रणा करने वालों से लेकर छद्मबाजी में लगे नेता और उनके पुछल्ले 2026 शुरू होते ही दिमागी आतिशबाजी करने लगे थे। ऊपर से उर्मिला सनावर का प्रकट होना होलिका दहन से पहले का बड़ा समाचार रहा है। उर्मिला क्या हुई, मानो पूरे उत्तराखण्ड में सूखे और गीले रंगों की बरसात हो गई। इसके बाद रही बची पूर्व जिलापंचायत सदस्य आरती गौड़ ने कसर निकाली।

देवभूमि में देवों के गणों का औतरना यानी उनका अवतार होना ही था। उर्मिला को देवदूत मानते हुए जो रंग बरसे उसमें भाजपा के कद्दावर नेता रहे सुरेश राठौर का हुलिया टाइट कर दिया। पेंच कसने और ढीले करने के इस पूरे तमाशे में होली की सी ठिठोली होने लगी। हैवानों के हत्थे चढ़ी अंकिता भण्डारी की आत्मा क्या कहेगी? अपने कर्मों का पाठ पढ़ने वाले सोशल मीडिया की आड़ में लगातार चालू हो गये। तड़का लगता रहा और कई नेतागर्द उछाल मारने लगे। पौष आ गया होली के गीत 'भव भंजन गुन गाऊँ' के बीच सड़कों पर आन्दोलन जारी था। उत्तरायणी भी घुघुतों के साथ निपट गई। बसन्त के गीत 'आयो बसन्त सभी वन फूलें' सुनाई देने लगे, पर होना क्या था जब राजनीति के झिलमिल सितारों का आंगन सज चुका हो? शिवरात्रि पर भांग-धतूरे की चर्चा हुई और व्रत भी हुए पर न्याय की बात फुस्स.........। किसका न्याय? कैसा न्याय? कौन सा न्याय? व्यूहरचना में कौन किस सीट से चुनाव लड़ेगा और कौन किसे पटखनी दे सकता है, यह कानाफूसी होने लगी।

इसके बाद होली का खुमार सर चढ़कर बोलने लगा तो कौन सुनने वाला है? रंगों की इस बरसात में सारा अटपट भी चटपट लगने लगा है। इस चपटप में पड़ी मिर्च कितना असर करेगी, यह तो कुछ समय बाद पता चलेगा। तब तक भीगते रहना हितकरी है। चलो हम-आप भी रंगों में भीगें और नाचें गाएं। सबको आशीष दें कि खुशहाली हर घर में हो और दुनिया के व्यापार और व्यवहार में किसी के साथ अन्याय न होने पाए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

दिखावे के लिये नहीं होते त्यौहार

बड़े त्यौहारों में गिना जाने वाला 'होली' हर बार की तरह चरम पर है लेकिन इसके रंग-ढंग भी दिखावे की ओर मुड़ने लगे हैं। जबकि त्यौहारों मतलब और मक्सद समाज को जोड़ने और एक-दूसरे को जानने-पहचानने के लिये होता है। दरअसल त्यौहार ही क्या, पूरे समाज का दर्पण सोशल मीडिया होते जा रहा है और प्रचार-प्रसार की आड़ में जिस प्रकार की चकाचौंध हो रही है उसमें दिखावे का प्रचलन अति हो चला है। सूचना आदान-प्रदान के साधनों पर जिस प्रकार की रंगीनियत चल रही है उसने लोगों के सोचने की शक्ति को कुन्द कर दिया है। जब हमारी दिनचर्या में ही रंगीन सपने और दिखावे का प्रचण्ड नाच चलेगा तो दुनियादारी की सच्चाई पर पर्दा पड़ा रहना स्वाभाविक है।

मानव समाज को व्यवस्थित करने, उसके उत्साह को उमंगित करने, लोगों को जोड़ने, प्रकृति को समझने के लिये मौसम अनुसार हमारे त्यौहारों की रूपरेखा बनी है। धार्मिक उत्सवों के अलावा मेलों का अपना चलन है लेकिन दिखावे की दुनिया जीने वालों ने इन सब में अपने रंग घोलने शुरू कर दिये हैं याने की आगे बढ़ने की अन्धी दौड़ में मनचाहा करना शुरू कर दिया है। इसके लिये सबसे आसान तरीका कुछ करो न करो सोशल मीडिया पर बने रहने के लिये बेधड़क चर्चा करो, एक-दूसरे को ऐसी प्रशंसा कर डालो कि वह उस जाल में फंसा रहे। दिखावे के इस फसाने में फंसने वाले बहुत देर में या दूर जाकर समझ पाते हैं कि वह मायावी जाल में घिरे थे। जबकि समाज का असली चेहरा कुछ और ही होता है।

होली का हुल्लड़ और हंसी-ठिठोली आमने-सामने होती है और इसमें यही प्रयास होता है कि जाने-अनजाने किसी से कोई कहा-सुनी कभी हुई भी है तो उसे गले मिलकर सुलटा लिया जाए। यही कारण है त्यौहारों में सामुहिकता का भाव है। त्यौहार के इस पवित्र भाव को समझने के बजाय इसे अपने झण्डों के साथ रंगने के लिये राजनीतिक दल, नेता, ठेकेदार, दलाल जिस तरह से मोर्चा खोल चुके हैं वह समाज के लिये शुभ संकेत नहीं है। इतना बड़ा त्यौहार कोई दिखावा नहीं है, इसमें उड़ने वाला रंग और गाए जाने वाला फाग यही सिखाता है कि हमारे आस-पास कोई भी कष्ट में न हो, सब मिलकर एक-दूसरे की मदद करें।

फसक

दाज्यू, धाकड़ धामी की महिमा ठैरी

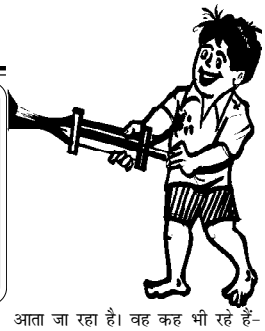

दाज्यू, हमारी तरफ से सबको होली की आशीष। पधान गणपत ज्यू इस बार गाजर का हलुआ बनाने की जिद कर रहे हैं। रेवाधर ज्यू ने आलू के गुटके पहले से तय कर दिये थे। मिल-बांटकर गाँव में परसादी हो जाएगी।

दाज्यू, हमारा बहुत मन हो रहा था इस बार देहरादून जाकर छरड़ी करने का लेकिन रेवाधर ज्यू और पधान ज्यू की परसादी के कारण रुकना पड़ा। वैसे भी क्या रखा है उस देहरादून में जहाँ पहले जैसी बात नहीं रही। बरसात में जिस हिसाब से गाड़-गदेरे उफनाने लगे थे डर के मारे हमारा त्रास हो गया। दाज्यू, दून में आए दिन होने वाले धरना-प्रदर्शन के बाद तो हमारा मन और भी उचाट हो गया है। बेचारे धामी ज्यू के भरोसे हमने भी छार फोक कर होली की धूनी रमा रखी है। वैसे भी धाकड़ धामी की महिमा ठैरी। हल्ला करने वाले सालों से कह रहे हैं- 'सीएम बदल रहा है।' दाज्यू, बुतका और हम लट्ठ लेकर सड़क पर दौड़ पड़े कई बार, आँखिर हमारे धाकड़ ज्यू के लिये कौन बोल रहा है। अब देखो जरा, हमारे धाकड़ धामी ने क्या कमी कर रखी है इस प्रदेश के लिये। बेचारे दिन-रात दौड़ादौड़ भजाभाज.....सबको साधना हुआ। जिसके

मन की न करो, वह टेड़ा हो जाने वाला ठैरा। पिछली होली में भी हमारे धाकड़ के पीछे पड़े थे कुछ लोग। दाज्यू, धाकड़ तो धाकड़ ही होने वाला ठैरा, चाहे कुछ कर लो। प्रदेश में एनडी तिवारी के बाद कौन चल पाया है इतना लम्बा? कुछ तो होगा आँखिर।

दाज्यू, हम तो बस इतना जानते हैं कि हमारे दोस्त और दुश्मन सब मिलकर बरस-बरस खेलें होरी। रखा क्या है इस दुनिया में। जब तक फतोड़ाफतोड़ नहीं होगी, पता कैसे चलेगा कि कौन कितने तोले के का है। दाज्यू, दो-चार तोले के आदमी को कौन मुंह लगाता है। वजनदार होना भी जरूरी है। धामी ज्यू में निखार आता जा रहा है। वह कह भी रहे हैं- 'जिन्हें जनता ने नकारा, वे अंकिता के नाम पर राजनीति कर रहे हैं। वह महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा की रक्षा को सदैव तत्पर हैं।' कांग्रेस की मुख्य प्रवक्ता गरिमा दसौनी कह रही हैं- 'अपराधियों का दुस्साहस चरम पर है और सरकार महिलाओं को सुरक्षा देने में पूरी तरह विफल साबित हुई है।' दाज्यू, हम तो बस इतना जानते हैं, करते रहो प्रदर्शन, खूब करो धरने, घेर लो गली-कूचे, जाम कर दो सड़कों को, क्या हो जाएगा? दाज्यू, सरकार चलाने वालों ने पहले क्या जो ऐसा किया था, अब युवा सीएम के पीछे पड़े हैं।

हमारा गिरधर और बबलू 2027 चुनाव के लिये इस होली पर खूब रंग उड़ा रहे हैं। उनका नारा है- 'धाकड़ हमारा है'। दाज्यू, गाँव की होली परसादी हो जाए, उसके बाद हम भी प्रदेश में घूमेंगे। सरकार सबके द्वार जा रही है तो हमारा भी कर्तव्य होने वाला ठैरा। होली से पहले मुख्य सेवक सदन से राज्य की महिलाओं को मुख्यमंत्री एकल महिला स्वरोजगार योजना की सौगात क्या मिली, माधुली और कलावती धिरक रही हैं।

-तुम्हारी भुली झकरुवा

SIDDHIVINAYAK
SOLVENT
LLP
Sidcul Industrial Park
Sitarganj
(Udham Singh Nagar)

Happy Holi

Happy Holi

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हल्द्वानी में होली बैठक सजाने के पीछे ज्ञानू कपिल का योगदान कभी नहीं भूला जा सकता है

डॉ. पंकज उप्रेती

होली बैठकी में हल्द्वानी कभी पीछे नहीं रहा है, इसके पीछे मुख्य कारण था ठण्ड के दिनों में भाबर आने वालों में वह कलाकार-होल्यार भी थे जो बैठकी में रम जाते। पहाड़ की होली हो या रामलीला उसे संवारने में लगे लोग हमेशा से रहे हैं। अपनी परम्परा को बनाए रखने और संगीत प्रति इनका लगाव नशा सा बनकर रहा। ऐसी दिललगी स्व. भुवन कपिल को

थी। हल्द्वानी के सर्वाधिक व्यस्त और एक समय में सबसे बड़े दादागिरी का अड्डा माना जाने वाले मुखानी चौराहे में कपिल परिवार रहता था। सम्पन्न और सक्षम परिवार के साथ-साथ अपनी संस्कृति के प्रति बेहद लगाव वाले इस परिवार की श्रीमती ज्ञानू कपिल इस बार की होली से पहले अन्तिम यात्रा में निकल गईं। स्व. भुवन चन्द्र कपिल के आवास पर तीन-चार माह तक नियमित रूप से होने वाली होली की धुंआधार महफिलों के रास-रंग सबने देखे हैं लेकिन इन महफिलों को संवारने के पीछे श्रीमती ज्ञानू कपिल का बड़ा योगदान था। 35-40 लोगों की नियमित बैठक को समय-समय पर चाय-पानी की तैयारी करने वाली श्रीमती कपिल ने कभी भी उलझन महसूस नहीं की बल्कि किसी कलाकार के अनुपस्थित होने पर उनकी पूछ करती थीं कि क्या बात वह नहीं दिखाई दे रहे। नियमित रूप से पौष के प्रथम रविवार से तीन-चार माह तक होली बैठक का समापन छरड़ी के बाद टीके की बैठक में होता था। बैठक की इसी बुनियाद के बीच हल्द्वानी में होली बैठक परम्परा को धार देने के लिए हिमालय संगीत शोध समिति का संगीत विद्यालय भी वर्षों तक इनके आवास पर रहा। समाज को भलाई में जोड़ने वाली श्रीमती ज्ञानू कपिल ने होली बैठक सजाने के पीछे जिस प्रकार का योगदान दिया, वह कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

तब सारे त्यौहार दौड़भाग के हवाले थे

मनोज जंगपांगी से बातचीज 1978-79 के दौर की

होली त्यौहार के मौके पर गौजाजाजी बिचली हल्द्वानी निवासी मनोज जंगपांगी से बातचीत प्रस्तुत है। उससे पहले इनके बारे में कुछ बताते चलें, जोहार के मान सिंह जंगपांगी के दो विवाह थे पहली पत्नी से मंगल सिंह, इन्द्रा जी इत्यादि थे। दूसरे विवाह से गजेन्द्र सिंह, रोहणी जी, महेन्द्र सिंह, खिला जी हुईं। इसके बाद की पीढ़ी के हैं मनोज जंगपांगी। दादा स्व. मान सिंह जंगपांगी, पिता स्व. महेन्द्र सिंह जंगपांगी 'महन्त' के लाड़ले मनोज के भाई स्व. हीरासिंह, बहन रक्षा व ज्योति/जमुना हैं। मल्ला दुम्मर में जन्मे मौजी प्रवृत्ति के श्री मनोज के बुजुर्ग व्यापार और माइग्रेशन में लम्बी यात्रा के पथिक रहे हैं लेकिन यात्रा का एक दौर इनके पाले भी पड़ा जब थल-ससखेत से पैदल चलकर यह लोग क्वीटी (नरेन्द्र सिंह रावत जी के घर), दूसरे दिन तिकसैन (देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू के घर) और फिर तीसरे दिन मुनस्यारी पहुँचते थे। कई बार भैंसखाल भी रुकना होता था। सन् 1986 में ये भाई मिलकर मिलम तक गये।

जैसा की पहले ही बता दिया है मौजी प्रवृत्ति के हैं अपने मनोज जी। तो इनका पठन-पाठन भी इसी तरह का रहा। थल, डीडीहाट, गंगोलीहाट, उत्तरकाशी में पढ़ाई करने के बाद 1986 में आईटीबीपी में भर्ती हो गये और 2001 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्त ले ली। 1989 में डीडीहाट की बसन्ती देवी के साथ इनका विवाह हुआ।

बातचीज में भी अपनी मौजी प्रवृत्ति के साथ वह कहते हैं- तब सारे त्यौहार दौड़भाग के हवाले थे। बात 1978-79 के दौर की है जब स्व. दुर्गासिंह मर्तोलिया ने पिघलता हिमालय के लिये जोड़ा और युवा उत्साह इतना था कि अल्मोड़ा फिर पिथौरागढ़ में इस अखबार को फैला दिया। पिघलता हिमालय की खुशबू दूर-दूर तक पहुँची। हम युवाओं की वही होली-दीवाली थी। साधन संसाधन कम थे लेकिन जोश था अपनों को एकजुट करने का। अल्मोड़ा में रावत पविार का जोहार ट्रान्सपोर्ट हुआ करता था, वहाँ जाकर रुकना होता था। होली का उत्साह आज भी कम नहीं है, जमाना अपनों को पहचाने की चूक न करे बस।

पिघलता हिमालय की खुशबू दूर-दूर तक पहुँची

हिमालय संगीत शोध समिति का होली संगीत के लिये योगदान

धीरज उप्रेती

पहाड़ की होली अद्भुत है, कहना आसान है लेकिन भाबर में इसकी धाक जमाने के पीछे कौन लोग रहे हैं यह भी जानना चाहिये। पहाड़ से जब मैदान में होली गायकी उतरी तो उसमें नागर होली का सर्वाधिक प्रचार हुआ लेकिन समय के साथ उसका चलन भुस्स होने लगा क्योंकि शराब व अन्य प्रकार की दादागिरी से यह सब कठिन सा लगता था। संगीत के भीगे और सुरीले पुराने कलाकारों ने अपनी परम्परा को को भाबर में अपने स्तर पर बनाए रखा लेकिन इसे संस्थागत रूप देकर समाज में ले जाने और इसके अनुशासन को बनाने के लिये हिमालय संगीत शोध समिति ने 1989 से जो कार्य निरन्तर किया है उसे नहीं भूलना चाहिये। इस संस्थान ने हल्द्वानी में अपने अभियान की शुरूआत करते हुए लगातार इसके लिये कार्य किया। जिसका परिणाम यह है कि वर्तमान में हल्द्वानी में देखादेखी होली बैठकों की भरमार होने लगी है। जबकि हिमालय संगीत शोध समिति अपनी परम्परागत स्थिति में ही है और चाहती है कि बिना किसी उचाट के नई पीढ़ी तक उन बातों को पहुँचा दे जो वर्षों से बुजुर्गों की धरोहर है। इसके लिये संस्था के संस्थापक डॉ. पंकज उप्रेती सहित सभी युवाओं ने लगातार प्रयास किया। भातरखण्डे लखनऊ से सम्बद्ध परीक्षाओं के अलावा इस संस्था ने अपनी लोक परम्पाओं के साथ कभी भी बाजार वाद से समझौता नहीं किया बल्कि अपने बल पर लोगों को जोड़ा है।

ज्योतिष की बातें- 270

2 मार्च 2026 को शुक्र समराशि मीन में प्रवेश करेगा, वहाँ पर मित्रग्रह शनि से युति भी होगी। अत: शुक्र बली रहेगा। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार शुक्र केवल छठवें, सातवें और दशवें स्थान पर अशुभ होता है अन्य स्थानों पर शुभ होता है। इसके साथ ही मकर व कुम्भ राशियों के लिए शुक्र योगकारक भी होता है। अत: शुक्र सांसारिक सुख, भौतिक सम्पत्ति आदि अपने कारक विषयों में अगले 24 दिन मीन, कुम्भ, मकर, धनु, वृश्चिक, सिंह, कर्क, वृषभ व मेष राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

होलिका दहन- फाल्गुन शुक्लपक्ष पूर्णिमा भद्रारहित प्रदोषव्यापिनी तिथि में होलिका दहन किया जाता है। होलिका दहन अर्धरात्रि के बात भी नहीं किया जा सकता। इस बार किसी भी प्रकार से भद्रा का त्याग करना सम्भव नहीं हो रहा है। इस कारण इस वर्ष होलिका दहन सोमवार 2 मार्च 2026 को भद्रा में ही प्रदोषकाल में अर्थात् सूर्यास्त से लगभग ढाई घण्टे बाद तक किया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

खिल रहे रंग दिगन्त

खिल रहे रंग दिगन्त
महक उठी धरती सगरी,
आए ऋतुराज बसन्त
आली, खिल रहे रंग दिगन्त
बन सुकुमार सुमन वन-वन फैले
चाहन मधुता में भंवरा डोले
लप-लप ललचाए अनन्त
आली, खिल रहे रंग दिगन्त
हाल कहूं क्या अपने उर के
देखे मधुकर अंग-अंग फड़के
ढूंढो री भ्रमर महन्त
आली, खिल रहे रंग दिगन्त।

कर दियो कान्हा कमाल

ग्वाले, जमुना तट पर,
कर दियो कान्हा कमाल।
कूल कालिंदी कृष्ण खड़े हैं
ग्वाला नटखट आन पड़े हैं
खेलें कन्दुक धमाल-2। कर दियो....
खेलत गेंद गिर गई जमुना में
सब भय विस्मय तहं विषधर दहं में
होवें अब कत हाल-2। कर दियो....
कूदो श्याम तुरत कालिय दहं में
मथ कर विषधर चढ़े ता पर में
नाचे फणिन दे-दे ताल-2।। कर दियो..

-दीवान सिंह कठायत
प्रधानाध्यापक, राआप्रावि उडियारी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मसूरी मालरोड के समीप अतिक्रमण हटाया

मसूरी। लाइब्रेरी मालरोड स्थित जल संस्थान कार्यालय व कसमण्डा जाने वाले मार्ग पर शेर प्रतिमा के ऊपर अवैध अतिक्रमण व वाहनों को हटाने तथा गन्दगी सफाई के लिये पालिका की टीम ने अभियान चालाया। सभासद जसबीर कौर के पास स्थानीय लोगों ने शिकायत की थी कि मालरोड से पटरी हटा दी गयी है लेकिन यहाँ पर सामान व बक्शे रखे हैं जिससे आने-जाने वालों को परेशानी होती है व रात को यहाँ पर लोग शराब पीते हैं जिसके कारण गन्दगी भी रहती है। इसके बाद पालिका टीम ने अभियान चलाया। यह भी तय किया गया है कि इस जगह पर कैमरे लगाये जायेंगे ताकि निगरानी हो सके।

पं.लोकरत्न पन्त 'गुमानी' जयन्ती की तैयारी

गंगोलीहाट। आदि कवि पं.लोकरत्न पन्त 'गुमानी' की जयन्ती उनके घर-ग्राम में मनाने की तैयारी है। इसके लिये जजुट के मूल निवासी राजकीय महाविद्यालय मालधन के प्रोफेसर डॉ.गिरीश चन्द्र पन्त के विचार को राजकीय स्ना.महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.बी.एम.पाण्डेय ने धरातल पर उतारने को कमर कस ली है। इसके लिये बकायदा गुमानी के घर उप्राड़ा जाकर महाविद्यालय की टीम ने सर्वे किया और ग्रामीणों से बातचीत भी की। अप्रैल में आयोजन होना है। बताते चलें कि खड़ी बोली के आदि कवि गुमानी गंगावली के क्षेत्र के विद्वानों में से हैं।

बिन्दुखत्ता राजस्व गांव को लेकर हुंकार

हल्द्वानी। बिन्दुखत्ता को राजस्व गांव घोषित करने को लेकर क्षेत्रवासियों ने हुंकार भरी है। भाकपा(माले), किसान महासभा इस मुद्दे को लेकर लगातार आन्दोलन करती रही है। बीते दिवस कांग्रसे की महारैली ने इस मांग को और ताकत दी जब संयुक्त संघर्ष समिति के नेतृत्व में विशाल रैली प्रदर्शन किया गया। ग्रामीणों ने दशकों पुरानी मांग पूरी करने के लिए डीएम को ज्ञापन सौंपा। पूर्व सीएम हरीश रावत, यशपाल आर्या, गोविन्द कुन्जवाल, हरीश दुर्गापाल इसमें मौजूद थे। दूसरी ओर सांसद अजय भट्ट का कहना है कि प्रदेश सरकार इस प्रकरण पर गम्भीर है। विधायक मोहन सिंह भी यही कह रहे हैं।

रालम गाँव एक वर्ष में तैयार हो जाएगा हेलीपैड

मुनस्यारी। विश्वप्रसिद्ध रालम गाँव अपनी खूबसूरती के लिये जाना जाता है। माइग्रेशन ग्रामों में शामिल रालम गाँव में एक वर्ष में हेलीपैड तैयार हो जाएगा, जिससे देश-विदेश के पर्यटकों को आने में सुविधा होगी। रालम ग्लेशियर देखने के लिये हर वर्ष 5 हजार ट्रेकर पहुंचते हैं। इनमें यूरोपीयन खासी संख्या में शामिल हैं। हेली सेवा शुरू होने के बाद मुनस्यारी आने वाले पर्यटकों का रुख रालम गाँव की ओ होगा।

ईई ग्रामीण निर्माण विभाग नितिन पाण्डेय कहते हैं कि मल्ला जोहार क्षेत्र के अन्तर्गत मिलम और रालम दो प्रसिद्ध ग्लेशियर हैं। मिलम में डेढ़ दशक पूर्व हेलीपेड बन चुका है। मानसून काल में उच्च हिमालयी गांवों में राशन पहुंचाने और बीमार लोगों को अस्पतालों तक पहुंचानें मिलम का हेलीपैड काफी उपयोगी है। करीब 14 हजार फीट की ऊंचाई पर बसे रालम क्षेत्र में मिलम से दूरी करीब 40 किमी है।

परिक्रमा

निकाय चुनाव की मांग पर आन्दोलन

किच्छा। प्रदेश सरकार द्वारा नगर पालिका क्षेत्र से अलग कर बनाई गई नई सिरौला कला नगर पालिका में जल्द चुनाव सम्पन्न कराए जाने की मांग को लेकर क्षेत्रवासियों ने जुलूस निकाला। कांग्रेस पर चुनाव में अवरोध का आरोप भी लगाया।

पूर्णागिरी मेले में दस बस रोडवेज की

टनकपुर। पूर्णागिरी मेले में रोडवेज प्रशासन ने इस बार पीलीभीत और बरेली रूट पर संचालित बसों को सीधे बूम, ठूलीगाड़ तक चलाने के लिये दस बसों का संचालन किया है, जिससे यात्रियों को काफी सुविधा मिलेगी। शारदा घाट पर विशेष सफाई अभियान भी चलाया जा रहा है।

पर्यावरण बटालियन नहीं होने देंगे शिफ्ट

पिथौरागढ़। पर्यावरण बटालियन को राजस्थान शिफ्ट करने के विरोध में क्षेत्र वासियों ने मोर्चा खोल रखा है। प्रदर्शन कारियों ने कहा कि पर्यावरण बटालियन का शिफ्ट होना केवल पूर्व सैनिकों या युवाओं का विषय नहीं बल्कि पूरे जनपद के अस्तित्व, पर्यावरण, हिमालय संरक्षण, सीमा सुरक्षा और पलायन रोकथाम से जुड़ा है। इसे शिफ्ट नहीं होने देंगे।

पीजी विधि संकाय खोलने की मांग

लोहाघाट। संघर्ष समिति ने पीजी कालेज में विधि संकाय खोलने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। विपिन गोरखा के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने कहा कि वर्ष 2013 में तत्कालीन सीएम विजय बहुगुणा ने इसकी घोषणा की थी लेकिन आज तक यह नहीं खोला गया।

पांखू में शराब में लिप्त का बहिष्कार

थल। पांखू क्षेत्र में अवैध शराब की बिक्री पर पाबन्दी के लिये महिलाओं ने मोर्चा खोल दिया है। कहा कि शराब में लिप्त लोगों का बहिष्कार कर जुर्माना लगाया जाएगा।

होली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
हैप्पी ट्रीटस
फास्ट फूड कार्नर, शुद्ध शाकाहारी
गैस गोदाम रोड, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी
प्रो.प्रा.भुवन चन्द्र काण्डपाल

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत सम्पर्क 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान) मो.- 9760342346

होटल
माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न.
8958525979,
9411134775
फोन सम्पर्क-
05961-222236

गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल,
जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

13वां आनन्द बल्लभ उप्रेती स्मृति सम्मान समारोह

हिमालय की परम्परा हमारी जड़ है : डी.एस.रावत

तितियाल, पंचपाल, बेलवाल सहित 14 सम्मानित

हल्द्वानी। पिघलता हिमालय के संस्थापक वरिष्ठ कथाकार पत्रकार स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती का 13वां स्मृति समारोह सिंथिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मनाया गया। इस अवसर पर हिमालय संगीत शोध समिति द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान' विषय पर वक्ताओं व शोधार्थियों ने अपने विचार रखे, वहीं डा. गोविन्द सिंह तितियाल, डीएस पंचपाल सहित 13 लोगों को आनन्दश्री सम्मान दिया गया।

इससे पहले समारोह में मुख्य अतिथि प्रोफेसर दीवान सिंह रावत कुलपति कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, विशिष्ट अतिथि करन सिंह नगन्याल (आईजी गढ़वाल) ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया। भुवनेश विराट के संचालन में हिमालय संगीत शोध समिति के कलाकारों ने आचार्य धीरज उप्रेती के निर्देशन में सरस्वती वन्दना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बाल कलाकारों का समूह गीत के पश्चात श्रीमती पुष्पा दुग्ताल व साथियों ने लोकभाषा पर कर्णप्रिय रचना की प्रस्तुति दी।

आयोजन सचिव डा. पंकज उप्रेती, संरक्षक फली सिंह दताल, संयोजक डा. भुवन तिवारी, सिंथिया कालेज के प्रबन्धक प्रवीन रौतेला ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि कुलपति प्राफेसर दीवान सिंह रावत ने कहा कि हिमालय की परम्परा हमारी जड़ है। इसे संवारने वाले महान हैं। उन्होंने पिघलता हिमालय परिवार द्वारा किये जा रहे ठोस कार्य की सराहना की।

विशिष्ट अतिथि करन नगन्याल ने स्व. उप्रेती को पहाड़ परम्परा का अग्रदूत बताया और कहा कि जिस विपरीत परिस्थितियों में भी इनके द्वारा समाज के लिये कार्य किये गये और आज भी उनकी पीढ़ी इसे आगे बढ़ा रही है, वह सराहनीय है। डॉ. तितियाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि समाज को जोड़ने वाले ऐसे आयोजन हमेशा याद किये जाते हैं। संरक्षक फली सिंह दताल ने सभी से अभियान के सारथी बननपे का आह्वान करते हुए कहा कि लला जसुली की धरोहरों को बचाने के लिये पिघलता हिमालय परिवार के साथ उन्हें मजबूती मिली है और यह जारी रहेगा। अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर पीसी बाराकोटी ने कहा कि पहाड़ की जड़ जंगल जमीन पर जागरूकता दिखाओ। जिस प्रकार से हम समाज को बनाएंगे वह उस दिशा में जाएगा, इसलिये जरूरी है कि मार्गदर्शक की भूमिका में रहें। संचालक भुवनेश विराट ने पिघलता हिमालय की समाज में भूमिका विषय पर विस्तार से जानकारी देने के अलावा अब तक के आनन्दश्री सम्मान की सूची का वाचन किया। कहा कि जिस प्रकार के लोगों का चयन इसके लिये किया जाता है वह पहाड़ से मैदान तक के चुने हुए मोती हैं, जो अपने समाज अपनी मातृभूमि की सोच रखते हैं। प्रोफेसर अतुल जोशी ने स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती और श्रीमती कमला उप्रेती सहित स्व. दुर्गासिंह मर्तोलिया का स्मरण करते हुए कहा कि समाज की भलाई के लिये हमेशा लड़ने वाले ऐसे लोग विरले होते हैं। इसके अलावा उन्होंने दानवीरांगना लला जसुली से प्रेरणा लेने की बात कही जिन्होंने नेपाल और तिब्बत तक धर्मशालाएं बनवाकर लोगों को मदद की। जिस दौर में साधनों का आभाव था तब यात्रियों के लिये इस प्रकार की सुविधाएं करवाने का महान कार्य किया। कहा कि उनकी धरोहरों को बचाने में सबको आगे आना चाहिये।

इन्हें मिला आनन्दश्री सम्मान

कुलपति प्राफेसर डीएस रावत, डॉ. गोविन्द सिंह तितियाल, श्रीमान करन सिंह नगन्याल, डाक्टर महिमन सिंह दुग्ताल, श्रीमान घनश्याम ग्वाल, श्रीमान जीवन सिंह सीपाल, श्रीमान देव सिंह पंचपाल, इंजी. नरेन्द्र सिंह पतियाल, सजग पत्रकारों म पंकज जोशी 'विशेष', ललित मोहन बेलवाल, हर्ष रावत, दीक्षा बिष्ट, पवन कुंवर।

बाल कलाकार किरन कोटनाला सम्मानित

आयोजन में रामनगर की बाल कलाकार किरन कोटनाला को सम्मानित किया गया। जिसने 50 म्यूजिकल वाद्ययंत्रों को बजा कर इंफुलेंसर बन अपना नाम वर्ल्ड रिकार्ड बुक में दर्ज कराया है।

97 शोध पत्र प्रस्तुत

समारोह के दौरान हिमालय, आनन्द उप्रेती, जसुली शौक्याणी पर केंद्रित 97 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। विभिन्न महाविद्यालयों के विद्वान प्राध्यापकों, शोधार्थियों ने हिमालय के लोक व्यवहार को लेकर अपनी बात रखी।

यह थे मौजूद

समारोह में नरेन्द्र सिंह न्यौला पंचाचूली, गिरीश चन्द्र उप्रेती, प्राफेसर अतुल जोशी, प्राफेसर गिरीश पंत, प्रोफेसर दीपा गोबाड़ी, श्रीमती गीता उप्रेती, श्रीमती आरती उप्रेती, गणेश सिंह ल्वांल, देवेश त्रिपाठी, डा. आशा हर्बोला, डा. जयश्री भण्डारी, ओपी पाण्डेय, गिरीश पाण्डेय, राम सिंह सोनाल, पुष्पा दुग्ताल, चम्पा दुग्ताल, पुष्पा रौतेला, जीवन सिंह दुग्ताल, शीला दुग्ताल, गणेश सिंह ल्वाल, मदन सिंह ग्वाल, दीवान सिंह सोनाल, पत्रकार भगवान सिंह गंगोला, हरीश चन्द्र पन्त, जगमोहन रौतेला, जहीर अंसारी, नारायण सिंह दरियाल, लोकेश सिंह दरियाल, राजीव जोशी, ललित मोहन धारियाल, उमेश तिवारी, दीपक रावत, योगेश तिवारी, कवि सिंह ग्वाल, डॉ.प्रिय दर्शन, पार्षद राजेश पन्त, सुनील रौतेला, मीनाक्षी राणा, अंशु साह, देवेश त्रिपाठी, लोकेश सिंह दरियाल, डॉ.दीप चन्द्र पाण्डे आदि मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती **फोन/मोबाइल**

9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हर दिन होती छरड़ी से कौन बचेगा?

होली के इस सीजन का वह मजा जाता रहा, जो पहले हुआ करता था। अब तो हर दिन हो रही छरड़ी से कौन बचेगा? न जाने कौन कब किसकी छाल घाम लगा दे। समाज में जुड़ने की बात कम, पिण्ड छुड़ाने की ज्यादा होने लगी है। बदबूदार बातों से परहेज भी नहीं हो सकता है। कैसे हो? पहले कुछ बदनाम गलियाँ हुआ करती थीं और कुछ गालियां। अब तो बात-बात पर गालियां और गोलियां सुनाई पड़ती हैं। बदनाम गलियों के निशान मिट चुके हैं, बदनामी भय नहीं रहा। जिधर छापेमारी हुई उसी शहर-कस्बे-गाँव-मोहल्ले से नामी-गिरामी दिखाई दे रहे हैं। 'को खेले ऐसी होली जा में आवा-गमन लागी डोरी' गुनगुनाते हुए समझ नहीं आ रहा है दुनिया का कौन सा हिस्सा सुरक्षित है।

अमेरिका का ट्रम्प दुनिया को हड़का कर रखना चाहता है और उत्तर कोरिया के किम जोन की पगल्योट भी कम नहीं है। देश-देशान्तर के राजे-महाराजे क्या जो न कर डालें, जब अपने ही छरड़ी पर उतर आए हैं। देश की संसद में सुर बेसुर सुनने का बहाना बनाने वाले भी कहने लगे हैं 'अब कैसे जोबना बचेगो, फागुन मस्त महीना की होरी।

उत्तराखण्ड में तो हर शहर मानो वृन्दावन बनने जा रहा हो। मंजिलों पर मंजिल, पत्थर पर पत्थर, टीन पर नया टीन, पानी और आग सबकुछ पारे की तरह चढ़ गया है। मुख्यमंत्री 'धाकड़' बात कर छरड़ी कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरदा गतह की दाल, नींबू, माल्टा और पता नहीं कितना कुछ प्रचार में लगे हैं। सतपाल महाराज, विजय बहुगुणा तो लड्डन साहब की भूमिका में होली की गुजिया सा स्वाद ले रहे हैं। हरक सिंह जरूर औतरने लगे हैं। यशपाल आर्या रास्ता बनाने में माहिर हैं लेकिन गोदियाल का रंग चटक है। काशीसिंह ऐरी 'गई गई असुर तेरी नार मन्दोदरी' होली को दोहराएं उससे पहले ही आशीष नेगी ने 'मेरे सनमुख आओ रावणा, नहीं बचेगो' सुनाना शुरू कर दिया।

बागेश्वर-कपकोट में तो भरभराके होली मची है। भगत दा के आशीष के बाद सुरेन्द्र गड़िया थाल-चिमट साथ बजाने लगे हैं। ललित फर्सवान की पिपरी भी कम नहीं है। गंगोलीहाट में तो 'सन्तन के हितकारी' गाते हुए फकीर दा और गुड्डू खजान जुटे हुए हैं। पिथौरागढ़ में मयूख दा ने बड़े वाले ढोल कसवा दिये लेकिन महेन्द्र लुण्ठी की 'घिन--के-नगड़ी' सुनाई दे रही है। होली मिलन चारों ओर है। ऐसे में विधायक हरीश धामी क्यों पीछे रहने लगे। उन्होंने रंगभरे गुब्बारे बरसाने का इन्तजाम पहले ही कर डाला था। डीडीहाट में तो विशन दा ने पक्के रंग वाली फैक्ट्री लगवाने की घोषणा कर दी है। कनालीछीना वाले भण्डारी जी ने भी रंग के गोले मारने वाली मशीनें लगवा ली हैं। हल्द्वानी में सुमित भुली रंग लगाने की जिद कर रहा है। लेकिन पार्टी वाले चिमटा लेकर नाचने पर भरोसा कर रहे हैं। दीपक बल्यूटिया ने भी रंग छोल रखा है। रानीखेत में करन माहरा आलू-गोजे से स्वागत कर ही रहे हैं। द्वाराहाट की पूछो मत, महेश दा लट्ठमार होली के मूड में हैं। कालाढूंगी में बंशीधर भगत ने सबको आशीष देनी शुरू कर दी है।? प्रकाश जोशी रंग छोलकर बैठे हैं। पूर्व ब्लाक प्रमुख भोला भट्ट ज्यू कह रहे हैं- पार्टी जिसको कहेगी पिट्ठया लगेगा।

आगे-आगे देखो अभी क्या होने वाला है। दवा-दारू की बात करने वाले कितना रंग उड़ाएंगे पता नहीं है। भावना पाण्डे, आरती गौड़, उर्मिला, सुरेन्द्र राठौर, उमेश कुमार, प्रणव चैम्पियन, दर्शन भारती हर कोई समाज का उद्धार करना चाह रहे हैं। इन रंगों की बरसात से शायद ही कोई बचेगा।

फूल फूले

फुलिगे चम्पा फुलिगे जया फुलिगे
सरसों दगड़ा-सरसों दगड़ा।।
पारा भिड़ा बुरुसि का फूल यस लागूं
याद ऐजें वीकी तब बड़ा भल लागूं
ठुमुकी वीकी चाला याद ऐगे।
फुलिगे।।
सीड़ि जसा खेतों में ग्यूं जौ का बालड़ा
लोगबागों मुखड़ि में ऐगे छ रौनका
अब सब जागा देखो खुशहाली ऐ गे।। फुलिगे।।
ग्यूं जौ का खेता अब लहराणा रईं
बौरों लै भरि आमा पेड़ा हंसिणई
देखो अब कोयल लै पारा भिड़ा ऐ गे।
फुलिगे चम्पा फुलिगे जया फुलिगे।।

फालगुन

फागुण मैहणां अब मोना आई गोछ।।
हरिया-हरिया खेता बुलुणां लागी रई
ग्यूं जौ का खेता हमें बुलुणा लागी रई
डाल-डाल पात-पात खुशहाली आई गेछ।।
दूर-दूर देखिणैंछा पिंगली बहारा
लागणछ ऐसो जैसो सोने की चादरा
सबूंका मुखड़ि मजी रौनका आई गेछ।।
फूलि रई फूल पाता
य मैहणां मजी
चाड़ा तितलि भौंरा
नाचणईं यमजी
ईश्वरे की माया देखि
मन सब भूलि गोछ।।फागुण.

-गोपालदत्त पाण्डेय
प्रयागराज

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)